रजि. न. MPHIN / 2007 / 22179

बरली की दुनिया

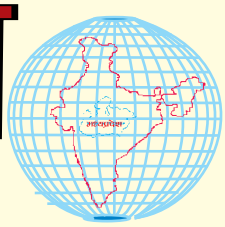

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान इन्दौर की मासिक समाचार पत्रिका

"मानव जाति एक पक्षी के समान है, जिसके दो पंख हैं, एक पुरुष दूसरा स्त्री। जब तक दोनों पंख मजबूत न होंगे, एक सांझी शक्ति के द्वारा हिलाए न जाएंगे, तब तक पक्षी की आकाश में उड़ान असम्भव है।"

वर्ष–5 | अंक 55 | सितम्बर 2011 | मूल्यः 5रू.

अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस विशेषांक

साक्षरता और शांति

अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस का परिचय

संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक व सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) ने 17 सितंबर 1965 को विश्व भर के लोगों को साक्षर बनाने के लक्ष्य हेतु हर साल 8 सितंबर को अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस मनाने की घोषणा की थी। सबसे पहले 8 सितंबर 1966 को पहली बार अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस मनाया गया था।

संयुक्त राष्ट्र के अध्ययन के अनुसार दुनिया भर में करीब चार अरब लोग साक्षर हैं और 77.6 करोड़ लोग न्यूनतम साक्षरता दर से भी नीचे हैं। इसका मतलब यह है कि हर पाँच में से एक इंसान निरक्षर है। दुनिया के लगभग 35 देशों में साक्षरता दर 50 फीसदी से भी कम है।

भारत में साक्षरता दर वर्ष 2011 में बढ़कर 74.4 फीसदी तक पहुंच गई है लेकिन यह अभी भी विश्व की औसत साक्षरता दर 84 फीसदी से काफी कम है। वर्ष 2011 में भारत में पुरुषों की साक्षरता दर जहां 82.16 फीसदी रही, वहीं महिलाओं की साक्षरता दर 65.46 फीसदी ही दर्ज की गई।

विश्व के विभिन्न हिस्सों में जारी हिंसा और गरीबी वैश्विक साक्षरता की राह में बड़ा रोड़ा साबित हो रहे हैं।

दुनिया भर में साक्षरता को बढ़ावा देने वाले संयुक्त राष्ट्र शैक्षणिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) ने इस वर्ष 8 सितंबर को मनाए जाने वाले अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस की विषय वस्तु 'साक्षरता और शांति' रखी है।

यूनेस्को की महानिदेशक इरिना बोकोवा ने अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस 2011 के मौके पर दिए अपने संदेश में कहा "इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस ने साक्षरता और शांति के आवश्यक

रिश्ते पर विशेष ध्यान देने का मौका दिया है।"

बोकोवा ने कहा, 'साक्षरता शांति की स्थापना के लिए पहली आवश्यकता है क्योंकि इससे कई लाभ होते है– साक्षरता मानवीय, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक दायरे से आगे निकलने में मदद करती है।'

उन्होंने कहा, 'नवीनतम आंकड़ों के मुताबिक 77 करोड़ 60 लाख वयस्कों में मूलभूत साक्षरता का अभाव है और वे पढ़ लिख नहीं सकते हैं। इनमें से ज्यादातर महिलाएं और बच्चे हैं। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय मामलों के विशेषज्ञ प्रोफेशर तुलसी राम ने कहा, 'अफ्रीका और दक्षिण एशिया में अशिक्षा के पीछे गरीबी एक बड़ा कारण है। इसके अलावा एक अन्य प्रमुख कारण वहां के छोटे–छोटे देशों जैसे सोमालिया, चाड, सूडान, कांगो में लंबे समय से हिंसा का दौर जारी है। वहां के कबीले बच्चों को लड़ाई के लिए सेना में शामिल कर रहे हैं जिससे वे शिक्षा से वचिंत हो रहे हैं।'

यूनेस्को के मुताबिक विश्व के संघर्षरत इलाकों में दो करोड़ 80 लाख बच्चे स्कूल नहीं जा रहे हैं। इन इलाकों में दी जाने वाली मानवीय सहायता में शिक्षा का हिस्सा मात्र दो प्रतिशत होता है। प्रोफेसर तुलसी राम ने कहा कि विश्वभर में साक्षरता को बढ़ाने के लिए राजनैतिक प्रतिबद्धता की जरूरत है।

उन्होंने कहा, 'वेनेजुएला में ह्यूगो शावेज जब सत्ता में आए तो उन्होंने सबसे पहले क्यूबा के दो लाख शिक्षकों को अपने देश में आमंत्रित किया ताकि वे उनके देशवासियों को शिक्षित कर सकें।

शावेज के इस कदम से आज वेनेजुएला में बहुत बदलाव आया है और लोग तकनीक और कृषि के क्षेत्र में बहुत आगे हो गए हैं। उन्होंने कहा कि वेनेजुएला की तरह ही भारत सरकार को चाहिए कि वह देश में सरकारी स्कूलों की संख्या बढ़ाये तथा वहां गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करे। बरली की दुनिया के इस अंक में हम आपको अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के इस साल का विषय "साक्षरता और शाँति" की जानकारी दे रहे है।

साक्षरता का मतलब

साक्षरता का मतलब है पढ़–लिख कर इस योग्य बनना कि सीखे हुए ज्ञान का उपयोग कर अपना, अपने परिवार और समाज के विकास में योगदान दे सकें। साक्षरता का मतलब केवल अक्षरों का ज्ञान होना या केवल पढ़ना–लिखना सीखना नहीं है। साक्षर होकर हम किसी भी विषय की जानकारी ले सकते हैं और अपना ज्ञान बढ़ा सकते हैं। ईश्वर ने हर एक को सोचने और समझने की शक्ति दी है। इससे हमारी बुद्धि सही दिशा में आगे बढ़ती है। शिक्षा इन क्षमताओं को पहचानने और उनको आगे बढ़ाने में मदद करती है क्योंकि शिक्षा से हमारा ज्ञान बढ़ता है, हमारी कुशलताएँ बढ़ती हैं तथा हमारे गुणों और क्षमताओं का विकास होता है। बहाई लेखों के अनुसार, "मनुष्य को अत्यन्त मूल्यवान रत्नों से परिपूर्ण एक खान समझो। केवल शिक्षा ही इसके कोषों को उजागर कर सकती है और मानव जाति को उसके लाभ के योग्य बना सकती है।"

हर इंसान को मूल्यवान हीरों की खान समझना चाहिए। इसका मतलब यह है कि हम सबमें बहुत सारे गुण, योगयताएं, क्षमताएं और हुनर छिपे है। केवल शिक्षा ही उन्हें हीरे की तरह चमका देती है और हमारे गुणों को बाहर लाती है। जिससे हमें, हमें हमारे परिवार, हमारे गाँव और पूरी मानवजाति को फायदा होता है।

साक्षरता शिक्षा का पहला कदम

साक्षरता एक ऐसी शक्ति है जिससे हम अपने जीवन को जैसा चाहे बना सकते हैं। साक्षरता शिक्षा की सीढ़ी का पहला कदम है। शिक्षा से जीवन के विकास के सभी दरवाजे खुलते हैं। पढ़ने लिखने से बहुत से काम ऐसे हैं जिन्हें हम अपने आप कर सकते हैं और किसी का रास्ता नहीं देखना पड़ता। जैसे अपनी सहेली या परिवार को पत्र लिखना, उसका उत्तर देना, समाचार–पत्र या कोई भी पुस्तक पढ़ना, पैसों का ठीक लेन–देन करना, पढ़–लिख कर टाईपिंग, कम्प्यूटर आदि सीखकर नौकरी कर सकते हैं या रेडियो, टी.वी. और इंटरनेट से जानकारियाँ ले कर अपना ज्ञान बढ़ा सकते हैं।

बरली संस्थान में जो प्रशिक्षणार्थी निरक्षर आती हैं वे साक्षरता के साथ–साथ स्वास्थ्य, कटाई सिलाई और मेरा अपना और मेरे समुदाय का विकास विषय सीखकर इतनी सशक्त हो जाती हैं कि उनको काम करने का एक नया तरीका आ जाता है। उनके अन्दर आत्मविश्वास आ जाता है और काम करने की शक्ति और बढ़ जाती है। वे अपने घरों में सिलाई करती हैं, नौकरी करती हैं, आंगनवाड़ी में या और दूसरी संस्था में शिक्षिका बनीं हैं, नर्स बनीं हैं, कमाई करके आत्म निर्भर हो रहीं हैं। अपनी किराना दुकान चलाती हैं। अपने गांव में महिला मण्डल बनातीं हैं, सहायता बचत समूह बनातीं हैं। बैंक से लोन लेकर मशीनें खरीदी हैं। गाँव की पंचायत से सरकारी योजनाओं को समझ कर उसमें सहयोग दे रहीं हैं। इन सभी कामों के पीछे उनकी शिक्षा की शक्ति ही काम कर रही है।

बरली संस्थान में साक्षरता प्रशिक्षण के उद्देश्य

साक्षरता संस्थान के सभी प्रशिक्षणों की नींव है। साक्षरता में सभी प्रशिक्षणार्थी भाग लेते हैं जिसमें उन्हें हिन्दी भाषा सिखाई जाती है। साक्षरता पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है कि वे ईश्वर के पवित्र लेखों को पढ़कर समझें कि उनके जीवन का क्या उद्देश्य है तथा अपने जीवन में आत्मनिर्भर बन सकें। प्रशिक्षण

का उद्देश्य प्रशिक्षणार्थियों की पढ़ने–लिखने की क्षमता के विकास के साथ–साथ उनके जीवन में सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक बदलाव लाना है जिससे प्रशिक्षणार्थी सामाजिक और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें। उनकी समझ बढ़ाना और उन्हें इस योग्य बनाना कि वे अपने समुदायों में जाकर अपने सीखे हुए ज्ञान को दूसरों तक पहुँचाए जिससे वे अपने परिवार और गाँव के विकास में सहयोग दे सकें। अंधविश्वास, छुआछूत जैसी सामाजिक बुराईयां दूर कर सके तथा लोगों को जागरूक करने की अपनी जिम्मेदारी समझ सकें और अपना योगदान दे सकें। साक्षरता प्रशिक्षण के बाद इस योग्य हो जाएं कि नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग की कटाई–सिलाई की परीक्षा दे सकें और प्रशिक्षण के बाद अपने समुदाय के लोगों को पढ़ने–लिखने के लिए प्रोत्साहित कर सकें।

साक्षरता से हम मानसिक रूप से भी सशक्त होते हैं। ईश्वर ने हम सबको विचार करने, सोचने व सही और गलत क्या है इसका अंतर जानने के लिए बुद्धि दी है। अच्छी और सही शिक्षा से ज्ञान व योग्यता बढ़ती है। इससे समाज में सम्मान भी बढ़ता है। विचार अच्छे होते हैं तो अच्छे काम करते हैं। हमारे अंदर नई चेतना का विकास होता है और हम स्वतंत्र रूप से सोच समझकर निर्णय ले सकते हैं। हमारे ज्ञान का स्तर बढ़ता है, व्यवहार में बदलाव आता है, परिस्थिति को समझ सकते हैं। जीवन के प्रति सही सोच मानसिक विकास में सहायक होती है। हमारे अंदर आत्मविश्वास बढ़ता है और हम जीवन की किसी भी मुश्किल का सामना करने से नहीं डरते हैं।

साक्षर होकर हम पवित्र पुस्तकों को पढ़कर स्वयं ईश्वरीय अवतारों की शिक्षाओं को पढ़कर उसका मतलब समझकर अपने जीवन का उद्देश्य जानते हैं। अपने अंदर अच्छे गुणों का विकास कर अपनी व दूसरों की सेवा कर सकते हैं। जब हम पढ़ते हैं तो हमारे मन में प्रश्न उठते हैं, उनके उत्तरों को जानने के लिए और पढ़ते हैं, इस तरह हमारे पढ़ने का सिलसिला जारी रहता है और हम ज्यादा ज्ञान पाते हैं और इस तरह सत्य की स्वयं खोज कर सकते हैं। आध्यात्मिक शिक्षा से हम एक दूसरे के प्रति प्रेम, सहयोग करना सीखते हैं और सभी काम शुद्ध मन से, ईमानदारी, प्रेम, दया, करूणा और दूसरों की भलाई के लिए करते हैं। अच्छे ज्ञान से हमें नशा, पीठ पीछे बुराई, चोरी नहीं करने जैसी आदतों कों सीखते हैं। सही शिक्षा लेकर गलत रीति रिवाजों में सुधार कर सकते है। बच्चों को शुरू से ही ईमानदारी, अनुशासन, सच्चाई, बड़ों का आदर करना जैसे आध्यात्मिक गुण सिखाने से वे आगे चलकर अच्छे इंसान बनते हैं।

साक्षरता और शाँति

दुनिया की आधी जनसंख्या महिलाओं की हैं। सभी महिलाएं यदि एकजुट होकर फैसला कर लेती है कि वे दुनिया में शाँति चाहती है तो शाँति हो जाएगी। क्योंकि सारी दुनिया थक चुकी हैं, देशों के आपसी झगड़ों से, धर्म के नाम पर होने वाले दंगों से, जाति, रंग व स्त्री–पुरूष भेदभाव के कारण और महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों से, भ्रष्टाचार से, सामाजिक व आर्थिक अन्याय से, आतंकवाद से और इन सभी के कारण कोई और रास्ता दिखाई नहीं देता। शाँति के लिए लोग प्यासे हो रहे है। दुनिया के चारों कोनों से शाँति की माँग हो रही है।

दुनिया के कई देशों में और हमारे देश में भी ऐसे बहुत लोग है जिनके पास खाने को रोटी नहीं, रहने को मकान नहीं, पहनने को कपड़ा नहीं, पीने को पानी नहीं और दूसरी तरफ लोग करोड़ों रूपये लड़ाई के लिए, हथियार खरीदने के लिए, बम खरीदने को लगा रहें है। सच यह है कि यदि जो पैसा युद्ध में लगाया जाता है, जैसे हथियारों पर, सेनाओं पर या युद्ध के सभी तरह के सामान पर, यह पैसा इतना ज्यादा है कि इससे दुनिया की गरीबी व बीमारी को दूर किया जा सकता है। भूख दूर की जा सकती है, हरेक के पास रोटी, कपड़ा और मकान हो सकता है। इस तरह के निर्णय लेने की शक्ति केवल महिलाओं में है। लेकिन ये तभी हो सकता है जब सभी महिलाएं एकजुट हो जाएं। महिलाओं में एकजुटता तभी आएगी जब हर महिला एक–दूसरे को अपनी समझे। दूसरी महिला के दर्द को अपना दर्द समझे, दूसरी महिला की खुशी को अपनी खुशी समझे, दूसरी महिला को आगे बढ़ाने में मदद करें। जो पढ़ी–लिखी हैं वे ऐसी महिलाओं को पढ़ाने में मदद करे जो नहीं पढ़–लिख पाई या जिन्हें नहीं पढ़ाया गया। जो अमीर है वे गरीब महिला के बारे में सोचे। शहर वाली महिलाएं गाँव वाली महिलाओं की जरूरतों को समझे। सभी महिलाएं अन्याय के प्रति अपनी आवाज़ मिलकर उठाएँगी तो कोई महिलाओं के साथ अन्याय नहीं कर पाएगा। एकता में इतनी बड़ी ताकत है कि कोई इस ताकत को हिला नहीं सकता।

खुशहाली और आगे बढ़ने के लिए शाँति बहुत जरूरी है। परिवार में अगर शाँति न हो, पति–पत्नी में आए दिन झगड़ा और मारपीट हो तो बच्चों पर बुरा असर पड़ता है। वैसे ही हमारे समुदाय और गाँव में शाँति न हो, दंगे होते हो तो गाँव आगे नहीं बढ़ सकता। वैसे ही अगर देश में युद्ध की स्थिति हो तो देश विकास नहीं कर सकता।

शाँति की शुरूआत व्यक्ति के मन से होती है। यदि एक व्यक्ति का हृदय पूर्वाग्रह से मुक्त, पवित्र प्रेम से पूर्ण है और संतुष्ट है

तो उसे शाँति महसूस होगी।

संस्थान के समाचार

बरली संस्थान में अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस मनाया

अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर तीन दिवसीय कार्यशाला का शुभांरभ बरली संस्थान परिसर में 6 सितम्बर को किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथी थे विख्यात कवि एवं शिक्षाविद् प्रोफेसर सरोज कुमार और विशेष अतिथि थे समाज सेवी श्री किशन मल्होत्राजी। संस्थान की पूर्व निदेशिका एंव निदेशक मंडल की सदस्या डॉ. (श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन,

संस्थान के निदेशक मण्डल सदस्य डॉ. गीता हांडा और जर्मनी से पधारी स्वंयसेविका सुश्री एलीसा कोनलेन ने भी कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

मुख्य अतिथि प्रोफेसर सरोज कुमार जी ने बरली की प्रशिक्षणार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि वे अक्षर ज्ञान प्राप्त करने के साथ–साथ सामाजिक नेतृत्व और विकास के कार्यों को अपने हाथों में ले और अपने गाँवों में परिवर्तन की लहर लाए। उन्होंने सुंदर कविताए सुनाकर सबका मन जीत लिया। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों के आत्मविश्वास को देखकर अपनी प्रसन्नता जताई और कहा कि इनमें से हर एक भविष्य की अपने गाँव की सरपंच है।

श्री मल्होत्राजी और श्रीमती जनक पलटाजी ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को आशीर्वाद एवं बधाई दी।

उद्घाटन कार्यक्रम में इन महिलाओं ने सांस्कृतिक नृत्य, भिलाली गीत और अपने अनुभव भी प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथी थे विख्यात लोक कवि एवं रचनाकार श्री नरहरि पटेल। विशेष अतिथि लायनेस क्लब की प्रेंसीडेंट श्रीमती मंजू मंडलोई, शिक्षाविद् श्री राधेश्याम नेगी और लेखक तथा अनुवादक श्री रूपेश कुमार शर्मा थे।

निदेशिका श्रीमती ताहेरा जाधव ने अपने उद्बोधन में कहा कि साक्षरता दिवस हमारे संस्थान के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि आज हमारे प्रशिक्षणार्थी दुनिया की साक्षर जनसंख्या में जुड़ गए है। उनमें से अधिकांश जब तीन महीने पहले यहाँ आए थे, तब निरक्षर थे लेकिन अब वे पढ़–लिख सकते है, सिलाई कर सकते है, जैविक खेती और सौर ऊर्जा के बारे में जानते है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक एक सूरज की तरह अपने गाँव को जगमग करने के लिए पर्याप्त है। उन्होंने कहा कि बरली संस्थान बहाई शिक्षाओं से प्रेरित है और बहाई लेखनी के अनुसार ज्ञान मानव जीवन के पंख है और विकास की सीढ़ी है। उन्होने आशा जताई कि सभी प्रशिक्षणार्थी साक्षरता और ज्ञान के प्रकाश से अपने घर–परिवार और गाँव को रोशन कर देंगे। उन्होंने कहा कि बहाई लेखों के अनुसार "मनुष्य बहुमूल्य रत्नों की खान की तरह है। केवल शिक्षा ही इन रत्नों को उजागार कर सकती है।" उन्होंने आशा जताई कि यहाँ प्रशिक्षण ले रही महिलाएं गाँव जाकर साक्षरता के इस प्रकाश को दूसरो तक पहुँचाएंगी और खुद भी पढ़ना जारी रखेंगी।

लेखक एवं अनुवादक श्री रूपेश कुमार शर्मा जी ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को ज्ञान के दीपक के समान बताते हुए कहा कि उन्हें इस दीप श्रंख्ला को आगे बढ़ाते रहना है।

शिक्षाविद् श्री राधेश्याम नेगी ने बरली संस्थान के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को निमाड़ी बोली में सम्बोधित करते हुए कहा कि उन्हें अपनी बोली पर गर्व होना चाहिए। उन्होंने यह कामना की कि संस्थान पूरे भारत में अपना नाम ऊँचा करे।

लायनेस क्लब की प्रेंसीडेंट श्रीमती मंजू मंडलोई ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि यह प्रशिक्षण आपका जीवन बदल देगा।

लायनेस क्लब की श्रीमती ज्योत्सना ने प्रशिक्षणार्थियों को कहा कि आप सभी एक चिंगारी हो जो मशाल की तरह बनोगे।

मुख्य अतिथी श्री नरहरि पटेल ने भीली बोली में सुंदर कविताएं सुनाकर सबका मन जीत लिया। उन्होंने संस्थान के प्रशिक्षण की प्रशंसा करते हुए कहा कि यहाँ मिट्टी के लौंदे को सोने की मूर्ति बना दिया जाता है।

जर्मनी से संस्थान में सेवा दे रही सुश्री एलीसा कोनलेन ने हिंदी में कविता सुनाकर सबका मन मोह लिया।

कार्यक्रम में श्रीमती स्याणी बड़ोले ने साक्षरता और स्वास्थ्य, कु. ग्यारसी अखाड़े ने साक्षरता और शांति और कु. जमना तड़वला ने प्रशिक्षण के अनुभव सुनाएं और उन्हें लायनेस क्लब की ओर से पुरस्कृत किया गया।

इस कार्यक्रम में मध्यप्रदेश के आलीराजपुर, खरगोन, धार, खण्डवा, बड़वानी, इंदौर, देवास, सिहोर तथा महाराष्ट्र के

जलगाँव जिले की 41 गाँवों की 93 गामीण एवं आदिवासी महिलाओं ने भाग लिया।

संस्थान के मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री योगेश जाधव ने कार्यक्रम का संचालन तथा धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

लायनेस क्लब द्वारा हिन्दी दिवस के अवसर पर बरली संस्थान की प्रोग्राम आफिसर श्रीमती तारू जमरे का सम्मान

13 सितम्बर 2011 को सुबह 11:00 बजे बरली संस्थान परिसर में हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर लायनेस क्लब इंदौर की ओर से प्रेंसीडेंट श्रीमती मंजू मंडलोई, एडवाइसर श्रीमती अनिता शाह और संस्थान की बोर्ड मेम्बर डॉ. श्रीमती गीता हाण्डा उपस्थित थे।

इस अवसर पर संस्थान की निदेशिका श्रीमती ताहेरा जाधव ने हिन्दी सीखने और बोलने के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने कहा "भाषा दिलों को जोड़ती है और एक करती है। भारतीय होने के कारण हमें अपनी राष्ट्रभाषा पर गर्व होना चाहिए।" उन्होंने यह भी कहा कि संस्थान की प्रोग्राम आफीसर श्रीमती तारू जमरे ने अपनी मेहनत, लगन और ईमानदारी से कदम आगे बढ़ाए और आज इस संस्थान में पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ आगे बढ़ रही है। हमें उन पर गर्व है और यह हमारी प्रशिक्षणार्थियों के लिए एक रोल माडल है।

हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर लायनेस क्लब की प्रेंसीडेंट श्रीमती मंजू मंडलोई ने कहा "कोई भी काम कठिन नहीं है, करना चाहे तो सरल हो जाता है'' उन्होंने बरली संस्थान के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि ये गागर में सागर के समान है, उन्होंने कहा कि आज हमें बरली में प्रशिक्षणार्थियों के लिए खेल आयोजित करने में तथा श्रीमती तारू जमरे को सम्मानित करने में बहुत आनंद आ रहा है। एडवाइसर श्रीमती अनिता शाह ने कहा "हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है, जिस प्रकार हम माँ का सम्मान करते है, उसी प्रकार हमें हिन्दी का सम्मान करना चाहिए।" डॉ. श्रीमती गीता हाण्डा ने सभी को बधाई देते हुए कहा कि उन्हे पूरे आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ना चाहिए और जो यहाँ सीखा है उसे गाँव में जाकर सब तक पहुँचाना है।

संस्थान की कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती तारू जमरे ने कहा "मैं सन् 1999 में प्रशिक्षण लेने आई थी। तब हिन्दी बोलना ठीक से

नहीं आती थी, प्रशिक्षण के बाद आत्म विश्वास बढ़ा और जिम्मेदारी से काम करना सीखा। मैं संस्थान की पूर्व निदेशिका के मार्गदर्शन और प्रोत्साहन से ही आगे बढ़ी। मैंने संस्थान में पढ़ाए जाने वाले विषय–हिन्दी साक्षरता, कटाई–सिलाई सीखाना, किचन स्टोर का हिसाब रखना, हिन्दी टाईपिंग और कम्प्यूटर पर काम करना सीखा। अभी भी हमें अच्छा काम करने के लिए उतना ही मार्गदर्शन व प्रोत्साहित किया जाता है।" लायनेस क्लब द्वारा श्रीमती तारू जमरे को उनकी उपलब्धियाँ और हिन्दी साक्षरता पढ़ाने के लिए सम्मानित किया गया।

प्रशिक्षणार्थियों को हिन्दी के संबंधित खेल खिलाएं गए और विजेताओं को पुरस्कार दिए गए।

कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती ढेडी बागदरे ने किया तथा आभार सिलाई ट्रेनर श्रीमती प्रमिला मेहता ने प्रकट किया।

बरली संस्थान में 101 वें प्रशिक्षण सत्र के अभिभावकों की तीन दिवसीय बैठक सम्पन्न

बरली संस्थान में 101 वें प्रशिक्षण सत्र के प्रशिक्षणार्थियों के अभिभावकों की तीन दिवसीय बैठक का आयोजन दिनाँक

14/9/2011 से 16/9/2011 तक रखा गया था। इस कार्यक्रम में मध्यप्रदेश के आलीराजपुर, खरगोन, धार, खण्डवा, बड़वानी, इंदौर, देवास, सिहोर के 41 गाँवों से तथा महाराष्ट्र के जलगाँव जिले से 164 अभिभावकों ने भाग लिया। बरली संस्थान इस तरह की अभिभावक बैठकों का आयोजन पिछले 18 सालों से करता आ रहा है।

इस अवसर पर संस्थान की निदेशिका श्रीमती ताहेरा जाधव ने सभी अभिभावकों का स्वागत किया तथा अपनी बेटियों को आगे बढ़ने में उनको प्रोत्साहन और मार्गदर्शन देने के लिए कहा।

इस बैठक का उद्देश्य यह था कि अभिभावक स्वयं आकर देखें और जानें की उनकी बेटी या पत्नी कैसी है? वे यहां पर अन्य बहनों के साथ कैसे रहती है? उनकी बेटी ने तीन महीने

में क्या–क्या सीखा है?उनमें क्या बदलाव हुआ है? बैठक के पहले और दूसरे दिन अभिभावक ने स्वंय कक्षा में भाग लेकर यह अनुभव किया। तीसरे दिन अभिभावकों ने अपने अनुभव सुनाए। उनमें से कुछ इस प्रकार है–

आलीराजपुर जिले की कु. मोहली के पिता श्री हेदरसिंह चौहान ने कहा कि मेरी बेटी प्रशिक्षण से पहले निरक्षर थी। यहाँ आकर उसने पढ़ना–लिखना सीख लिया है। संस्थान के प्रशिक्षण में उसे स्वास्थ्य, कटाई–सिलाई, मेरा अपना और मेरे समुदाय का विकास, पर्यावरण तथा नैतिक शिक्षा दी जा रही है जिससे वह आगे बढ़ेगी।

आलीराजपुर जिले की कु. रेखा निंगवाल के भाई ने कहा कि संस्थान में प्रशिक्षण के लिए मेरी बड़ी बहन आई थी अब वह गाँव में बहुत अच्छा काम कर रही है, उसे देखकर छोटी बहन को भेजा है।

इन्दौर जिले की कांता व रीना की माँ ने कहा कि हमारे गाँव की लड़कियाँ कुछ समय पहले संस्थान में प्रशिक्षण के लिए आई थी। उन्होंने प्रशिक्षण से होने वाले फायदों के बारे में हमें बताया। उसके बाद हमने हमारी दोनों बेटियों को प्रशिक्षण के लिए संस्थान भेजा।

खरगोन जिले की कु. सुका वास्कले के भाई ने कहा कि संस्थान में प्रशिक्षण के साथ–साथ पर्यावरण, जैविक खेती, सौर ऊर्जा आदि के बारे में सिखाया जा रहा है। इससे मेरी बहन को बहुत फायदा होगा।

आलीराजपुर जिले की कु. गुड्डी डोडवे के भाई ने कहा कि बरली संस्थान में हर काम समय पर किया जाता है और यहाँ का नियम व अनुशासन बहुत अच्छा है।

खरगोन जिले की कु. पूजा मंडलोई के भाई ने कहा संस्थान में अलग–अलग जिलों की महिलाओं को जो नैतिक शिक्षाएं जैसे एकता, प्रेम, न्याय, सहयोग आदि सिखाया जाता है इससे हमारे गाँव में बहुत फायदा होगा।

सिहोर जिले की कु. हेमलता मालवीय की मम्मी ने कहा कि प्रशिक्षण में जो शिक्षा दी जा रही है इससे मेरी बेटी में बहुत बदलाव आया हैं और प्रशिक्षण से वे अपने पैरों पर खड़ी होगी।

आलीराजपुर जिले की कु. निर्मला भिण्डे की मम्मी ने कहा कि बरली संस्थान का वातावरण हरा–भरा व सुंदर है।

खरगोन जिले की श्रीमती स्याणी बड़ोले ने कहा ''मैं चार बच्चों को छोड़कर प्रशिक्षण लेने आई। यहां पर पढ़ना–लिखना, कटाई–सिलाई सीखा, स्वास्थ व नैतिक शिक्षाएं ली। अब वापस अपने गाँव जाकर मेरे परिवार में बच्चों और आस–पड़ोस के लोगों को यह जानकारी दूंगी।''

खरगोन जिले की अनीता भट्टनागर की माँ ने कहा मेरी बेटी दूसरे को पढ़ा रही है यह देखकर बहुत खुशी हुई।

भोजन के उपरान्त सभी अभिभावकों ने अपनी बेटियों से विदाई

ली। इस तरह के अभिभावकों की बैठक के द्वारा संस्थान को अपने पाठ्यक्रम की गुणवत्ता बढ़ाने एवं अभिभावकों का बहुमूल्य सहयोग प्राप्त करने में सहायता मिलती है ताकि वे अपने पाठ्यक्रम अधिक सुचारू बना सके।

विस्तार केन्द्र के समाचार

भण्डारीपारा व शीतलापारा में प्रशिक्षण शुरू

05 सितम्बर 2011 को विस्तार केन्द्र ग्राम भण्डारीपारा व शीतलापारा में नए प्रशिक्षण सत्र का उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरूआत प्रार्थना से हुई।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कांकेर के पार्षद श्रीमान राकेश यादव ने कहा "बरली विस्तार केन्द्र में मेरा अपना और मेरे समुदाय का विकास, स्वास्थ्य शिक्षा व सिलाई कटाई के प्रशिक्षण द्वारा ग्रामीण महिलाओं को सशक्त करने का जो प्रयास कर रही है वह बहुत ही प्रशंसनीय है। उन्होने बताया हमारे लिए यह बहुत ही खुशी की बात है कि हमारे गाँव की महिलाओं को यह मौका मिला है के वे कम पैसे में अपने घर बैठे ही सिलाई–कटाई का प्रशिक्षण ले पाएंगे और स्वस्थ रहने के लिए सही जानकारी भी इनको इस प्रशिक्षण में मिलेगी। उन्होंने सभी प्रशिक्षणार्थियों से अनुरोध किया कि वे प्रशिक्षण में मन लगाकर सीखें क्योंकि तीन माह के बाद वे अपने परिवार के लिए एक उम्मीद की रोशनी बन जाएगे और माता–पिता बेटी होने पर घबराहट या बोझ नहीं बल्कि गर्व महसूस करें।"

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महिला मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती आरती यादव ने कहा "हमारे गाँव की ज्यादातर महिलाएं ऐसी है कि वे कुछ काम धंधा कर अपने परिवार को आगे बढ़ाना चाहती है। महिला मण्डल की बैठक में भी यह बात रखी गई थी। लेकिन हमारे पास साधन नहीं थे। बरली विस्तार केन्द्र का यह प्रशिक्षण कार्यक्रम हमारे गाँव में शुरू हुआ। हम संस्था के आभारी है और आशा करते है कि अधिक से अधिक संख्या में महिलाएं इस प्रशिक्षण का पूरा लाभ उठाएंगी। केन्द्र प्रभारी श्रीमती मन्ना शर्मा ने विस्तार केन्द्र का परिचय दिया। "बरली विस्तार केन्द्र 6 साल से कांकेर जिले में अस्थायी रूप से महिलाओं को प्रशिक्षण दे रही है। विस्तार केन्द्र से महिलाएं प्रशिक्षित होकर अपने परिवार तथा समुदाय का विकास करेंगी।"

कार्यक्रम का परिचय देते हुएं केन्द्र की प्रशिक्षिका श्रीमती ममता रावल ने कहा कि विस्तार केन्द्र में तीन माह के प्रशिक्षण के बीच में माता–पिता व परिवारजनों की बैठक होती है। इसके अलावा अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस, पर्यावरण दिवस, एड्स दिवस आदि मनाया जाते है।

सहप्रशिक्षिका कु. सुरेखा मरकाम ने प्रशिक्षण के नियम व समय सारणी की जानकारी दी।

सहप्रशिक्षिका कु: दिव्या हिचामी ने प्रशिक्षण में कौन–कौन सी सामग्री की जरूरत होती यह जानकरी दी।

इस कार्यक्रम में 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का संचालन व आभार श्रीमती मन्ना शर्मा ने किया।

संस्थान को देखने आए मेहमान

⇒ 9 सितम्बर 2011 को विधायक श्रीमती नीना विक्रम वर्मा, एस.पी. श्रीमती कमलेश गुप्ता, अपरसचिव डॉ. रचना त्यागी तथा सरकारी अफसरों का दल संस्थान देखने के लिए आया। संस्थान की निदेशिका श्रीमती ताहेरा जाधव

ने उन्हें संस्थान की गतिविधियों के बारे में विस्तार से बताया और संस्थान का भ्रमण कराया। उन्होंने सभी प्रशिक्षणार्थियों से बातचीत की और संस्थान की गतिविधियों पर खुशी व्यक्त करते हुए आशा जताई की वह और आगे बढ़ेगा।

⇒ एम्मी अवार्ड, ग्लोबल सिने अवार्ड, दुपंत अवार्ड, गोल्डन

ईगल आवर्ड आदि अन्तराष्ट्रीय अवार्डों से सम्मानित श्री रोहित गाँधी और उनकी टीम (सुश्री समा साबेत, श्री अभिषेक मौर्य, श्री वरुण एम नायर ने संस्थान में आकर दो दिन 28 एवं 29 सितम्बर 2011 तक संस्थान की गतिविधियों का फिल्मांकन दूरदर्शन के लिए किया। उन्होंने लिखा "यह एक बहुत अलग दुनिया हैं, यहाँ का सुन्दर वातावरण, यहाँ के प्रशिक्षणार्थियों की लगन और उनके सुन्दर स्वरों में गाई प्रार्थानाएं और गीत हमें हमेशा याद रहेंगे।"

⇒ अनाम प्रेम परिवार से 20 लोगों का समूह 29 सिमम्बर को संस्थान देखने के लिए आया। श्री योगेश जाधव ने उन्हें

संस्थान का भ्रमण कराया। यहाँ पर हो रही गतिविधियों को देखकर वे सभी बहुत प्रेरित हुए।

⇒"डेवालप्मेन्ट इन एक्शन" के वोलेन्टीयर कोर्डिनेटर श्री जोजफ बर्ड 19 सितम्बर को संस्थान देखने आये। संस्थान की निदेशिका श्रीमती ताहेरा जाधव ने उन्हें संस्थान की जानकारी दी। मुख्यकार्यपालक अधिकारी श्री योगेश जाधव ने उन्हें संस्थान का भ्रमण कराया। संस्थान देखकर उन्होंने कहा, "बहुत प्रेरणादायी और अविस्मरनीय भेंट, अनोखा और महान कार्य, बहुत धन्यवाद।"

प्रिंटेड मैटर–बुक पोस्ट

पता

_____

_____

_____

_____

बरली संस्थान का अगला प्रशिक्षण

संस्थान का अगला छह माह का प्रशिक्षण 1 दिसम्बर 2011 से शुरू होगा जो बहनें प्रशिक्षण लेना चाहती हैं वह संस्थान से फॉर्म मंगवाकर 25 से 30 नवम्बर 2011 तक आवेदन कर सकती है। इस प्रशिक्षण में पर्यावरण, स्वास्थ्य शिक्षा, मेरा अपना और मेरे समुदाय का विकास के साथ–साथ उन्हें पढ़ना–लिखना व कटाई–सिलाई सिखाकर माह अप्रैल 2012 में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली की परीक्षा दिलवाई जाएगी। कटाई–सिलाई की परीक्षा के लिए चार पासपोर्ट साईज फोटो, जन्म प्रमाण पत्र की दो फोटो कापी साथ भेजें। अगर पढ़ी लिखी है तो अंक सूची की दो फोटो कापी व 655 रूपये नगद या मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान के नाम से भेजें। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा की कटाई सिलाई की परीक्षा की फीस 350 रूपये हैं, 5 रूपये संस्थान के आवेदन फार्म और संस्थान में पढाए जाने वाली स्वास्थ्य, साक्षरता, और कटाई–सिलाई की पुस्तकों का शुल्क 300 रूपये है।

बरली की दुनिया ऑनलाईन भी है। इसके पहले वाले अंक www.barli.org के our publications में देख सकते हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोगी
श्रीमती ताहेरा जाधव, श्रीमती ढेडी बागदरे

हमें पत्र लिखें

"बरली की दुनिया" के पाठकों से विनम्र निवेदन है कि आप हमें नीचे लिखे पते पर पत्र लिखें कि आपको नियमित "बरली की दुनिया" मिल रही है या नहीं।

संपादक "बरली की दुनिया"
बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान
180 भमोरी, न्यू देवास रोड, इंदौर 452010 (म.प्र.) फोन न. 0731–2554066

रजि. न. MPHIN / 2007 / 22179

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान की ओर से बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान, 180 भमोरी, न्यू देवास रोड़, इन्दौर – 452010 द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित
मुद्रण स्थल : राजा ऑफसेट, 863/9,नेहरूनगर, इन्दौर द्वारा मुद्रित **संपादक : डॉ. (श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन**